दिनांक 23.05.74 की अव्यक्त वाणी पर आधारित मुरली कविता

❊ पाँच विकारों पाँच तत्वों से पार ले जाने वाला

❊ अपने हर बच्चे को सच्चा वैष्णव बनाने वाला

❊ वाणी से परे ले जाकर वानप्रस्थी बनाने वाला

❊ गिरती कला से चढ़ती कला में ले जाने वाला

❊ शिवबाबा आज पूछ रहा बच्चों से कुछ सवाल

❊ बोलो बच्चों क्या है आपकी अवस्था का हाल

❊ अपनी वानप्रस्थ अवस्था एक पल में बनाते हो

❊ बोलो क्या तुम वाणी से परे सहज हो जाते हो

❊ कितने रहते हो अचल अडोल जब आए तूफान

❊ कितना स्वयं को बना लिया तुमने बाप समान

❊ कर्म स्वभाव संस्कार का खुद में ज्ञान समाओ

❊ इनका महत्व समझकर बाप समान बन जाओ

❊ सुनने सुनाने के संग वाणी से परे होते जाओ

❊ हद की प्राप्तियों के आकर्षण से मुक्ति पाओ

❊ बच्चों सच्चे वैष्णव तब ही नजर तुम आओगे

❊ सर्व प्रकार की आकर्षण से मुक्ति जब पाओगे

❊ सूक्ष्म पाप क्या है बच्चों करो इसकी पहचान

❊ पाँच तत्वों से मुक्ति पाना होगा तभी आसान

❊ दूरदर्शी के संग संग सूक्ष्मदर्शी भी बन जाओ

❊ सूक्ष्म पापों का अपने जीवन से प्रभाव मिटाओ

❊ पड़ने लगा बच्चों पर रॉयल पुरुषार्थ का प्रभाव

❊ मिलावटी लगने लगा कुछ बच्चों का स्वभाव

❊ प्रकृति और विकारों के वश बच्चे जब हो जाते

❊ भयभीत करने वाली बातें औरों को भी सुनाते

❊ ऐसी आत्माओं का संग कभी ना तुम अपनाना

❊ माया की माला में बच्चों ना कभी पिरोए जाना

❊ आकर्षण से मुक्त होकर खुद को वैष्णव बनाना

❊ सहज तभी होगा विजय माला में पिरोया जाना